प्रश्न 1:10 1:30

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

(1) नैतिक मार्गदर्शक के रूप में अंतरात्मा

अंतरात्मा नैतिक मार्गदर्शन का आंतरिक स्रोत है। यह ईश्वर द्वारा व्यक्ति के मन में स्थापित नियम है। अंतरात्मा 2 प्रकार से मार्गदर्शन करती है-

(1) ज्ञानात्मक अंतरात्मा

यह विधि, प्रथा, कानून नियमों के आधार बना के निर्णय का निर्देश देती है

(2) अधिकारात्मक अंतरात्मा

यह हमे नैतिक कार्य हेतु आंतरिक रूप से दबाव डालती है। त्रुटिपूर्ण अंतरात्मा तो गलत कार्य हेतु कानून से परे जाने तक का निर्देश देती है।

प्रश्न क्रमांक	मुख्य परीक्षा म.प्र. लोक सेवा आयोग	नीचे हाशिए में नहीं लिखें

13

भ्रष्टाचार के प्रभाव

समाज पर

(1) असंतोष वृद्धि

(2) मानव मूल्य का पतन

(3) प्रशासन से विश्वसनीयता भंग

राजनीति पर

(1) लोकतंत्र का दमन

(2) दल-बदल

(3) अपराधीकरण

(4) योजनाएं लक्ष्य तक नहीं पहुँचती।

प्रशासन पर

(1) प्रशासनिक दक्षता गिरती है।

(2) गैर उत्तरदायित्व

(3) लालफीताशाही बढ़ती है।

18

महावीर स्वामी (पंचमहाव्रत)

- अस्तेय — चोरी न करना
- अहिंसा — मन-कर्म वचन से पीड़ा न पहुंचाना
- अपरिग्रह — जरूरत से ज्यादा संग्रह न करें
- ब्रह्मचर्य — इन्द्रियों पर संयम
- सत्य — सद् मान्यता का अनुसरण

व्हिसल ब्लोअर

D

कम्पनी अधि 2013- ऐसे लोग जो किसी संस्था के सदस्य होते है और उस संस्था मे ज्ञात अनैतिक प्रथाओ को उजागर करते है वे व्हिसल ब्लोअर कहलाते है।

इनके संरक्षण हेतु व्हिसल ब्लोअर एक्ट -2014 बनाया गया है

प्रभाव => व्यापम घोटाला, 2G- स्कैम आदि इनकी वजह से प्रकाश मे आए।

G

ब्रह्म समाज के संस्थापक राजा राम मोहनराय थे।

R

गीतांजलि के लेखक- रविन्द्रनाथ टैगोर थे

G

तुलसीदास जी की रचनाए =>

(a) रामचरितमानस (b) विनय पत्रिका

(c) रामलल्ला नहछु

प्रश्न क्रमांक	मुख्य परीक्षा म.प्र. लोक सेवा आयोग

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

समानुभूति

यह संवेगिक बुद्धि का एक हिस्सा है जिसमें एक व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति को हर्ष या विषाद की स्थिति में देख कर, स्वयं को उसकी जगह रख कर समान हर्ष या पीड़ा का अनुभव करता है।

महत्व → यह एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक सत्यनिष्ठा है। प्रशासन में यह जरूरी है कि व्यक्ति, सामान्य जनों की पीड़ा से समानुभूति रखे।

J

सर्वोदय

सर्वोदय से तात्पर्य है "सबका उदय"

समाज में सबके साथ से, सबका कल्याण सबको समान दर्जा एवं सबके कार्य को समान महत्व।

इसके प्रेरक थे- महात्मा गाँधी

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

प्रश्न क्रमांक

नीचे हाशिए में नहीं लिखें

K

मनोवृत्ति के घटक

संवेगात्मक मनोवृत्ति	संज्ञानात्मक मनोवृत्ति	व्यवहारात्मक मनोवृत्ति	अभिप्रेरक
व्यक्ति में कोई कार्य ~~करनी~~ करने की भावना पैदा होना	किसी निर्णय के अच्छे-बुरे परिणाम जानना	विभिन्न परिस्थिति में व्यवहार निर्धारण करना	कार्य करने हेतु प्रेरणा देना।

उदाहरण - चोरी करने का भाव पैदा होना संवेगात्मक तत्व है, उसके परिणाम जानना संज्ञानात्मक तत्व है साथ ही चोरी करना या न करना व्यवहारात्मक मनोवृत्ति है

प्रश्न क्रमांक

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

L

केन्द्रीय सतर्कता आयोग

स्थापना → 1964

उद्देश्य → केन्द्रीय स्तर पर भ्रष्टाचार के मामले की जाँच

संरचना - 1 मुख्य सतर्कता आयुक्त
+
10 अन्य आयुक्त

m

सत्य-निष्ठा

किसी व्यक्ति की मन-कर्म-वचन की सुसंगतता सत्यनिष्ठा कहलाती है

अर्थात हम जो सोचे वही बोले और जो बोले वही करे।

यह एक अनिवार्य प्रशासनिक मूल्य है।

प्रश्न क्रमांक

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

नीचे हाशि... में नहीं लि...

उदाहरण

विवेक, साहस, संयम ये मूल सद्गुण हैं जो न्याय की उत्पत्ति करते हैं।

प्रश्न क्रमांक A

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

लोकसेवकों हेतु लोक आचरण संहिता

"यह लोकसेवकों हेतु एक बाध्यकारी नियमों का समूह है जिन्हे बेहतर एवं दक्ष प्रशासन हेतु अनिवार्यतः प्रशासकों को पालन करना होता है।

अखिल भारतीय सेवाओं मे इसकी शुरुआत 1954 मे हुई वही मध्यप्रदेश लोक सेवक आचरण संहिता 1965 में निर्मित हुई-

इसके प्रमुख बिन्दु

(1) आय व संपत्ति का ब्यौरा प्रस्तुत करना
(2) 2000 से महंगे उपहार की जानकारी एवं बीस हजार से महंगी खरीदी की जानकारी विभाग को देना।

(3) पारितोष न लेना।
(4) शक्ति व सत्ता का दुरुपयोग न करना

(5) विधि के शासन पर आस्था रखना।

(6) सार्वजनिक निंदा से बचना।

प्रश्न क्रमांक	मुख्य परीक्षा म.प्र. लोक सेवा आयोग

नीचे हाशि... में नहीं लि...

(i) अनामता का सिद्धान्त

(ii) जवाबदेह व उत्तरदायित्व ग्रहण करना

(iii) सार्वजनिक हितों को निजी हितों पर प्राथमिकता देना

इस प्रकार इन संहिताओं को प्रशासन को पारदर्शी, जवाबदेह, उत्तरदायी बनाने हेतु निर्मित किया गया है हलांकि, यदा कदा अनुशासन हीनता के मामले दृष्टिगोचर होते हैं किन्तु इनकी उपयोगिता प्रशासन में अति महत्वपूर्ण है।

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

प्रश्न क्रमांक

निष्पक्षता

अपने कार्यों एवं दायित्वों के निर्वहन के दौरान बिना किसी पक्षपात के तर्क व नियमों के आधार पर निर्णय लेना निष्पक्षता कहलाता है।

इसमें किसी सगे-संबंधी, स्वजाति, धर्म के लोगों को अनुचित लाभ नहीं पहुँचाया जाता।

असमर्पिताडिता

किसी भी राजनीतिक दल, विचारधारा से तटस्थ रहना।

इसमें निम्न बातें
- प्रचार प्रसार न करना
- वोट न मांगना
- चुनावी चंदा न मांगना
- राजनीतिक प्रभाव से बचना

गुरुकुल आई.सी.एस.
2nd माला, सुंदरम काम्पलेक्स, भंवरकुआँ मेन रोड़, इन्दौर
9827462437, 0731-2465085, 0731-2367970

प्रश्न क्रमांक	मुख्य परीक्षा म.प्र. लोक सेवा आयोग

वस्तुनिष्ठता

निर्णयन की प्रक्रिया दौरान व्यक्तिगत अवधारणा, संवेग, चेतना के अधिकारों आधारों से मुक्त रहना।

ऐसा इसलिए क्योंकि प्रशासन में यह जरूरी है कि निर्णय तर्क व नियम के आधार पर हो।

भ्रष्टाचार के प्रकार

राजनीतिक भ्रष्टाचार | प्रशासनिक भ्रष्टाचार | न्यायिक भ्रष्टाचार | पुलिसिया भ्रष्टाचार

व्यवसायिक भ्रष्टाचार

राजनीतिक भ्रष्टाचार

(१) पैसे ले कर दल-बदल करना।

(२) चुनावी खर्च का ब्यौरा न देना।

(३) चुनावी चंदे अपारदर्शी होना

(४) सार्वजनिक धन दबा लेना।

प्रशासनिक भ्रष्टाचार

(१) शक्ति, सत्ता, पद का दुरुपयोग।

(२) आय से ज्यादा संपत्ति।

(३) आय का ब्यौरा न देना।

(४) पारितोष लेना।

(५) महंगे उपहार प्राप्त करना।

(६) प्रशासनिक विलंब करना।

(iii) व्यवसायिक भ्रष्टाचार

(क) गलत माप - तौल ।
(ख) मिलावट
(ग) गलत मूल्य व गुणवत्ता
(घ) अनुचित प्रतिस्पर्धा
(ङ) गोलबंदी, जमाखोरी करना

न्यायिक भ्रष्टाचार

(क) निर्णय मे देरी करना।
(ख) पैसे ले कर सुनवाई टालना या पक्षपात करना।

पुलिसिंग

(क) पारितोष ग्रहण कर पीड़ित पक्ष को उत्पीड़ित करना।
(ख) रिपोर्ट न लिखना।

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

दयानंद सरस्वती के सिद्धान्त

दयानंद सरस्वती का जन्म 1824 में गुजरात में हुआ। वे आर्य समाज के संस्थापक (1875) थे ~~स्वामी~~

स्वामी दयानंद ने धर्म, समाज, राष्ट्र संबंधी अनेक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। उनमें से कुछ प्रमुख निम्न है-

धार्मिक (1) वेद एकमात्र सत्य है पुराण मिथ्या है।

(2) ईश्वर एक है निर्गुण व निराकार है

(3) धर्माडंबर, टोना, जादू आदि व्यर्थ है।

(4) यज्ञ अनिवार्य है।

(5) मूर्तिपूजा, मृत्युभोज निरर्थक है

(6) वेदों की ओर लौटने का नारा दिया

समाज (1) अस्पृश्यता हिंदु-धर्म का कलंक है

(2) जाति कर्म आधारित हो

(iii) जातिवाद एकता का नाश करती है।

(iv) विधवा पुनर्विवाह, बालिका शिक्षा के समर्थक।

(v) बाल विवाह अनैतिक है।

(vi) दलित हो या सवर्ण सबको वेद पाठ का अधिकार है।

राष्ट्र व संस्कृति

(i) स्वधर्म, स्वराष्ट्र, स्वदेशी सबसे श्रेष्ठ है।

(ii) स्वतंत्रता जीवन का मूल है इसे पर सबका अधिकार है।

(iii) योग व आध्यात्म पाश्चात्य सभ्यता से ज्यादा बेहतर है।

प्रश्न क्रमांक | नीचे हाशिए में नहीं लिखें

लोक सेवा हेतु आधारभूत
योग्यताए

ऐसी योग्यताए जो स्वच्छ, जनोन्मुख पारदर्शी, कल्याणकारी लोक सेवा हेतु अनिवार्य होती है जैसे-

(1) तटस्थता (6) असमर्पक नाति
(2) निष्पक्षता (7) सत्यनिष्ठता
(3) वस्तुनिष्ठता (8) संवेदनशीलता
(4) उत्तरदायित्व (9) अभिक्षमता
(5) पारदर्शिता (10) सहिष्णु

तटस्थता
किसी भी धर्म या धार्मिक विचारो से तटस्थ रहना।

निष्पक्षता
बिना किसी पक्षपात के, स्वतंत्र रूप से उत्तरदायित्व का निर्वहन करना।

वस्तुनिष्ठता
निर्णय लेते समय व्यक्तिगत चेतना के आधारों से मुक्त रहना।

प्रश्न क्रमांक	मुख्य परीक्षा म.प्र. लोक सेवा आयोग

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

(8)

उत्तरदायित्व व जवाबदेही

विवेकाधीन शक्ति धारण करना, उनका संयम से प्रयोग करना, प्रत्येक कार्य एवं निर्णयों की संतोषजनक व्याख्या करना।

पारदर्शिता

कार्यों में खुलापन रखना, प्रशासन के प्रत्येक कार्यों की जानकारी जनता तक आसानी से सार्वजनिक करना।

असमर्थक-बाहिता

किसी भी राजनैतिक विचारधारा से तटस्थ रहना। राजनैतिक प्रश्रय न लेना।

सत्यनिष्ठा

अपने कर्तव्यों को लेकर मन-कर्म-वचन से ईमानदार रहें।

प्रश्न क्रमांक

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

नीचे ... में नहीं ...

संवेदनशीलता

जनता के प्रति, उनके समस्याओं के प्रति संवेदनशील होना।

सहिष्णुता

~~स्वयं~~

अपने से भिन्न मतो, विचारो को सम्मान देना। किसी तरह का पूर्वाग्रह या रूढ़ि न रखना।

प्रश्न क्रमांक	मुख्य परीक्षा म.प्र. लोक सेवा आयोग	नीचे हाशिएं में नहीं लिखें
6		

राम मनोहर लोहिया के विचार

सामाजिक

(१) जातिप्रथा, राष्ट्र की एकता का नाश करने वाली है।

(२) अस्पृश्यता हिन्दु धर्म का कलंक है इसे मिटा देना चाहिए।

(३) दलितों का उद्धार शिक्षा एवं मनोबल वृद्धि द्वारा।

(४) ब्राह्मण-सेठ गठबंधन भारतीय इतिहास की धुरी।

(५) अंतर्जातीय विवाह प्रोत्साहित हो।

(६) सर्व सुलभ शिक्षा की व्यवस्था।

(७) समाज में सब समान हो, सबके कार्यों को बराबर सम्मान मिले।

आर्थिक विचार

(i) मार्क्सवाद एवं गांधीवादी समाजवाद का मिश्रण।

(ii) समान अवसर आर्थिक अवसर की बात की
(iii) धन का समान वितरण हो किन्तु गांधीवादी तरीके से

(iv) श्रमिकों को वेतन की सुरक्षा प्राप्त हो

(v) ग्रामों मे कुटीर उद्योग एवं कृषि आधारित उद्योग निर्मित हो।

(vi) सीमित पंजीकरण हो।

(vii) सरकार का उत्पादन की प्रक्रिया मे तटस्थ हस्तक्षेप हो।

प्रश्न क्रमांक

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

भ्रष्टाचार कम करने में
सोशल मीडिया एवं
इन्टरनेट भूमिका

सोशल मीडिया व इन्टरनेट वर्तमान समय में अभिव्यक्ति व सूचना प्राप्ति का सशक्त माध्यम बन के उभरा है।

भ्रष्टाचार एक वैश्विक समस्या है जो वास्तव में नैतिक मूल्यों के पतन का परिणाम है किन्तु इस पर नियंत्रण प्राप्त किया जा सकता है जब कार्यों में पारदर्शिता हो और प्रत्येक कार्य की जानकारी जनता तक पहुँचे एवं इसका बृहत स्तर पर विरोध किया जा सके।

सोशल मीडिया भ्रष्टाचार के दैनिक मुद्दों को परस्पर एक से दूसरे व्यक्ति के मध्य प्रसारित कर एक जनमत तैयार करने हेतु प्रेरित करता है।

जैसे ट्विटर में इसके विरुद्ध कैम्पेन चलाना

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

इससे यह होता है कि देश व विदेश मे लोग इसका हिस्सा बनते है और सरकार पर यह दबाव होता है कि उचित कदम उठाए।

वहीं इन्टरनेट हमे दैनिक समाचार घटनाओं से परिचय करा कर तथाकथित भ्रष्टाचार मुद्दों की सूचना देता है।

इन्टरनेट द्वारा ही सूचना का अधिकार का हम उपयोग कर सकते है, जानकारी मांग सकते है।

इसी के उपयोग द्वारा हम व्हिसिल ब्लोइंग करके या कोई भ्रष्टाचार का फुटेज विडियो शेयर कर सकते है।

इस प्रकार इन्टरनेट व सोशल मीडिया ने भ्रष्टाचार विरोधी अभियानों को मजबूत किया है एवं सरकार की अनेक सेवाए ऑनलाइन प्राप्त होने से उनमे पारदर्शिता आई है।

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

प्रश्न क्रमांक

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

भ्रष्टाचार पर संयुक्त राष्ट्र संघ
की घोषणा

राष्ट्र संघ की बैठक - 2003
अध्यक्षता - कोफी अन्नान
उपस्थित सदस्य - 58
अब तक हस्ताक्षर - 178 देश
लागू - 2005

उद्देश्य
वैश्विक स्तर पर भ्रष्टाचार रोधी सामूहिक प्रयास

प्रावधान

अनु० 6- सदस्य, भ्रष्टाचार रोधी नियमों का निर्माण करें।

अनु० 7 कर्मचारियों के वेतन भत्ते में वृद्धि करें।

अनु० 63- देश भ्रष्टाचार रोकने हेतु परस्पर तकनीकि व सूचना का आदान प्रदान करेंगे, साथ ही प्रत्यर्पण में

सहायता करेंगे।

(v) वैश्विक स्तर पर होने वाली संधि समझौतों में पारदर्शिता हो।

(vi) देशों में चुनावी चंदों एवं प्रक्रिया में पारदर्शिता हो।

(vi) भ्रष्टाचार रोधी संस्थाओं की स्थापना की जाए।

(vii) समन्वित भ्रष्टाचार रोधी प्रयास किए जाए।

नीचे हा में नहीं।

शासन प्रशासन में संवेगिक बुद्धि की उपयोगिता

सांवेगिक बुद्धि

स्वयं एवं दूसरों के ~~विचार~~ संवेगों को समझना | अभिव्यक्त करना | युक्तियुक्त प्रतिबंध लगाना।

सांवेगिक बुद्धि के घटक हैं

आत्मनियमन | आत्मजागरूकता | अभिप्रेरणा | समानुभूति

एक प्रशासक हेतु यह जरूरी है कि उसे यह पता हो कि उसमें उठने वाले संवेग कैसे हैं, अपने संवेगों को पहचानना, आत्मजागरूकता है।

फिर स्वयं के संवेगों पर नियंत्रण पाना आत्मनियमन है।

आत्मनियमन का लाभ है प्रतिकूल व तनावपूर्ण

गुरुकुल आई.सी.एस.
(An institute for civil services)
2nd माला, सुंदरम कांपलेक्स, भंवरकुआ मेन रोड, इन्दौर
9827462437, 0731–2465085, 0731–2367970

प्रश्न क्रमांक

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

स्थिति में , तनाव के माहौल में विवाद की स्थिति में स्वयं को संतुलित रखना । क्यों कि यदि हम संवेगों पर नियंत्रण पा सके तो प्रतिकूल परिस्थिति में भी बेहतर कार्यनिष्पादन करेगा।

वहीं अभिप्रेरणा एक प्रशासक को विपरीत परिस्थिति में भी कार्य करने हेतु प्रेरित रखता है। न केवल प्रशासक स्वयं बल्कि अपने आधीनस्थो को भी प्रेरित करता है।

समानुभूति एक आवश्यक घटक है क्यों कि प्रशासक का जनता के समस्या के प्रति संवेदनशील होना जरूरी है। जब वह जनता की समस्याए स्वयं को उनकी जगह रखकर देखेगा तो उनकी समस्याओ को सही तरह पहचानेगा और उचित कार्यवाही करेगा ।

संक्षेप में प्रतिकूल परिस्थिति में भी अडिग रहना, प्रतिलोकुल बने रहे, प्रेरित रहने एवं संवेदी प्रशासन हेतु संवेगिक बुद्धि आवश्यक है।

प्रश्न क्रमांक	मुख्य परीक्षा म.प्र. लोक सेवा आयोग	नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

J

प्रबोधक संप्रेषण

किसी निश्चित लक्ष्य हेतु किसी व्यक्ति की मनोवृत्ति मे परिवर्तन करना प्रबोधक संप्रेषण कहलाता है।

नकारात्मक मनोवृत्ति —— प्रबोधक संप्रेषण ——> सकारात्मक मनोवृत्ति

प्रबोधक संप्रेषण

प्रबोधन कर्ता	विषयवस्तु	श्रोता
(a) आकर्षक व्यक्तित्व वाला।	(a) उत्तेजक हो	(a) शांत श्रोता
(b) कुशल वक्ता	(b) प्रभावी हो	(b) उग्र श्रोता
(c) सर्वमान्य एवं प्रतिष्ठित हो	(c) सौन्दर्यपरक हो	(c) हठजन

यह प्रबोधन का मुख्य बिन्दु है।

प्रश्न क्रमांक	मुख्य परीक्षा म.प्र. लोक सेवा आयोग

सफल प्रबोधन हेतु प्रथम माँग तो यह है कि प्रबोधनकर्ता आकर्षक व्यक्तित्व वाला हो, जिसे लोग सुनना पसंद करें। जैसे- अमिताभ बच्चन

फिर विषयवस्तु उत्तेजक हो जैसे-
"मैं देश नहीं झुकने दूँगा"।
डरावना हो जैसे "तम्बाकू खाने से कैंसर होता है"।

या सौंदर्य परक हो जैसे सौन्दर्य प्रसाधनों मे सुन्दर युवती द्वारा प्रचार कराना।

इसी तरह यदि श्रोता उग्र है तो प्रबोधन आसान नहीं होता जबकि शांत श्रोता होने पर सरलता से प्रबोधन संपन्न होता है।

उपयोगिता

(i) नकारात्मक मनोवृत्ति दमन में
(ii) हिंसक भीड़ को शांत करने
(iii) पर्यावरण जागरूकता
(iv) नशा मुक्ति
(v) आतंकी मनोवृत्ति परिवर्तन

प्रश्न क्रमांक	मुख्य परीक्षा म.प्र. लोक सेवा आयोग	नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

लोक सेवा में समानुभूति का महत्व

समानुभूति से तात्पर्य है स्वयं को दूसरे व्यक्ति की जगह रखकर उसके हर्ष या विषाद का अनुभव करना।

समानुभूति एक संवेगिक बुद्धि है एवं इसका प्रशासनिक सत्यनिष्ठा में अति महत्व है।

लोकतांत्रिक व्यवस्था में प्रशासन की संवेदनशीलता जनता के प्रति होना एक मूल आवश्यकता है।

वास्तव में जब तक प्रशासकों में समानुभूति का गुण नही समाहित होगा, वे संभवतः सामान्य जनता, वंचित वर्गों की पीड़ा जान नहीं पाएंगे। उनके कर्तव्य, दायित्व अपने कार्य के समय तक ही सीमित रहेंगे।

लेकिन यदि उनमे समानुभूति की भावना है तो अपनी क्षमताओं से परे हो वे निर्धन, वंचितवर्गों उत्पीड़ितों की सहायता हेतु तत्पर होंगे।

प्रशासकों की दक्षता एवं समयबद्धता बढ़ेगी। इन सभी कदमों से से समाज का अधिकतम् कल्याण सुनिश्चित होगा और लोकतंत्र को सार्थक किया जा सकेगा।

संक्षेप मे समानुभूति के प्रशासन मे लाभ है-

(1) बेहतर संवेदी प्रशासन

(2) समाज का अधिकतम् कल्याण

(3) समय पर समस्या निवारण

(4) सेवाओं की बेहतर गुणवत्ता

(5) विश्वसनीय प्रशासन

(6) लोकतंत्र को मूर्त रूप दिया जा सकेगा।

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

प्रश्न क्रमांक	
2	

भारतीय समाज के उत्थान में स्वामी विवेकानंद.

स्वामी विवेकानंद, भारत के अग्रगण्य मनीषियों, दार्शनिकों में से प्रमुख हैं। वे वेदान्त व नवहिन्दुवाद के प्रवर्तक थे।

विश्व और भारत विवेकानंद को आध्यात्मिक योगदान हेतु जानता है किन्तु अप्रत्यक्षतः उन्होंने समाज और राष्ट्र हेतु अतुल्य भूमिका का निर्वहन किया। इनके सामाजिक प्रयासों को हम निम्न बिन्दुओं के आधार पर संक्षेप में जानेंगे ⇒

(a) जातिप्रथा निरर्थक है, वर्ण जन्म नहीं कर्म आधारित है।

(b) अस्पृश्यता हिन्दु धर्म की एकता में बाधक है। इस बाधा को दूर करना जरूरी है।

प्रश्न क्रमांक

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

(iii) दलितों का उत्थान शिक्षा एवं वेदान्त द्वारा संभव है।

(iv) वेद पाठ का अधिकार शूद्रों को भी प्राप्त हो।

(v) इसी संदर्भ में उन्होंने कहा "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता"
अर्थात नारी का सम्मान करने वाले स्थान में सदैव ईश्वर वास करता है।

(vi) सामाजिक समानता के समर्थक थे।

(vii) समाज के दीन दुखी, रोगी, पीड़ित व्यक्ति में ही ईश्वर को देखते थे।

उनका मूल सिद्धान्त था नर सेवा नारायण सेवा

इसी उद्देश्य से उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की।

प्रश्न क्रमांक

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

लोक प्रशासन में नैतिक दुविधा

3

नैतिक दुविधा से तात्पर्य है विचारों या सिद्धान्तों के मध्य संघर्ष की स्थिति।

अर्थात जब निर्णय लेते समय 2- नैतिक सिद्धान्तों के मध्य टकराव हो तो यह स्थिति नैतिक दुविधा कहलाती है।

प्रशासन में यह निम्न प्रकार से परिलक्षित होती है-

(अ) जोखिम संबंधी

जब ऐसी स्थिति हो कि यदि हम अपने कर्तव्य का निर्वहन करें तो या तो हमें आर्थिक या जीवन हानि का भय हो

जैसे- किसी शक्तिशाली व्यक्ति के विरुद्ध अभियोग लगाने में यह भय हो सकता है कि आपके जीवन को संकट हो।

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

(II) विकल्प संघर्ष से उत्पन्न

इसमे 2 विपरीत परिणामो वाली स्थितियो मे एक का चयन करना कठिन होता है।

जैसे यदि हम किसी राजनेता की अनैतिक मांग स्वीकार करते है तो यह मेरी कर्तव्यनिष्ठा को चुनौती दी। और यदि हम उसे मना करें तो हो सकता है कि वे मेरा स्थानांतरण करा दें।

(III) अनेक ~~विकल्पों~~ विकल्पो से उत्पन्न

जब किसी एक स्थिति का चयन करने हेतु हमारे पास अनेक विकल्प हो और ~~हमारे पास~~ संशय उत्पन्न हो।

उपाय

नैतिक दुविधा से हल पाने हेतु नैतिक तर्क जैसे - विधि, नियम लोकसेवक आचरण संहिता, सार्वजनिक हित का प्रयोग करना चाहिए। इसके अलावा संस्था में प्रचलित पूर्व परिपाटी का चयन किया जा सकता है।

गुरुकुल आई.सी.एस.
(An institute for civil services)
2nd माला, सुंदरम काम्पलेक्स, भंवरकुआँ मेन रोड़, इन्दौर
9827462437, 0731-2465085, 0731-2367970

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

प्रश्न क्रमांक 11

मनोवृत्ति निर्माण के कारक

(1) साहचर्य
(6) परिवार
(2) तकनीकि मीडिया
(3) पृष्ठभूमि (अनुभव)
(7) समाज
(4) पुरस्कार, दण्ड
(8) संस्कृति
(5) अनुसरण
(9) पेशा

साहचर्य

हम जैसे लोगों की संगति में रहते है वैसी ही मनोवृत्ति का निर्माण करते हैं।

मीडिया व तकनीकि

मीडिया एवं तकनीकि से प्राप्त सूचनाएं हमारे मन-मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डालती हैं।

प्रश्न क्रमांक

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

परिवार

व्यक्ति की प्रथम - पाठशाला, जहाँ उसके चरित्र, व्यक्तित्व, मनोवृत्ति का निर्माण होता है। परिवार जनों का व्यवहार वैसी ही मनोवृत्ति निर्मित करता है।

अनुभव

किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, वर्ग से प्राप्त पूर्व अनुभव उसके प्रति उसी भांति की मनोवृत्ति बनाते हैं।

समाज

यदि हम एक स्वस्थ्य एवं सभ्य समाज में रह रहे हैं तो निश्चित ही हमारी मनोवृत्ति सकारात्मक होगी।

वही समाज अगर विकृत है तो हमारी मनोवृत्ति भी विकृत ही होगी।

संस्कृति

यदि हम पश्चिमी देशों में जाते हैं तो वहाँ पैदा व होने वाली मनोवृत्ति

प्रश्न क्रमांक	मुख्य परीक्षा म.प्र. लोक सेवा आयोग

पुरी देशों से भिन्न होगी।

पेशा

हम जिस व्यवसाय मे है, हमारी मनोवृत्ति उसी व्यवसाय के अनुरूप हो जाती है

पुरस्कार – दण्ड

किसी अच्छे कार्य हेतु पुरस्कृत करना और बुरे कार्य हेतु दण्ड देना सकारात्मक मनोवृत्ति तैयार करती है

प्रश्न क्रमांक	मुख्य परीक्षा म.प्र. लोक सेवा आयोग	नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

गुरु नानक देव

दर्शन

(i) एकेश्वरवादिता , निर्गुण निराकार।

(ii) एक ही ईश्वर की आराधना ।

(iii) सब समान है चाहे जाति कोई भी

(iv) स्वयं से अर्जित धन , समाज के कल्याण मे लगाओ।

(v) हमेशा आनंदित रहो

(vi) महिलाए सम्मानित है, पुरुष की सहयोगी है।

(vii) काशी - काबा एक है एक है राम रहीम ।

(viii) धार्मिक कट्टरता व आडम्बर व्यर्थ है

(ix) दीन दुखियो की सेवा करो।

(x) एक पंथ ते सब जग उपजेया कौन भले को मंन्दे, सब एक दे बंदे ।

(xi) स्वस्थ्य रहने हेतु ही भोजन करो

प्रश्न क्रमांक	मुख्य परीक्षा म.प्र. लोक सेवा आयोग

(a) सब एक ही थाली मे खाओ चाहे जाति कोई भी हो।

(b) सबका सम्मान करो।

(c) कोई भूखा न सोए।

3 बाल विवाह समस्या
निदान

1 समस्या क्या है—

यह मामला बाल विवाह का है साथही इससे संबद्ध समस्या है—

(a) ग्रामीण गरीबी
(b) विकृत सामाजिक प्रथा
(c) रूढ़ि
(d) अशिक्षा
(e) गैर जागरूकता
(f) प्रशासन की अनदेखी

बाल विवाह की समस्या बीमारू राज्यो के ग्रामीण क्षेत्रो मे आम है किन्तु वास्तव मे इसके कारण है

ग्रामीण निर्धनता क्योंकि जब लड़की के पिता के पास माता दहेज देने के पैसे न हो तो त्वरित सुझावो या परिवार जल्दीबाजी मे व ऐसा करते है।

प्रश्न क्रमांक

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

हमारी विकृत सामाजिक व्यवहार एवं रूढ़ि जिन्हे हमे वर्षों पहले समाप्त करना था, हमने आज भी जिंदा रखा है यही कारण है कि ऐसी घटनाएं समक्ष आ रही है।

ग्रामीण अशिक्षा और गैर जागरूकता के कारण ही ग्रामीण अभिभावक ऐसा कदम उठाते है नही तो शासन द्वारा संचालित लाडली लक्ष्मी योजना, सुकन्या समृद्धि योजना, एवं बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजनाएं

– बालिकाओं की आर्थिक, शैक्षणिक, वैवाहिक समस्याओं का समाधान करने मे सक्षम है।

एक अन्य समस्या है प्रशासनिक असंवेदनशीलता की जो, ऐसे मामलों पर मौन बैठा रह जाता है।

गुरुकुल

प्रश्न क्रमांक	मुख्य्य परीक्षा	नीचे हाशिएं में, नहीं लिखें

म.प्र. लोक सेवा आयोग

बाल विवाह की समस्याए

(a) अल्पायु मे बालक व बालिका मानसिक रूप से तैयार नहीं।

(b). जल्दी गर्भधारण करना मातृ स्वास्थ्य व शिशु स्वास्थ्य दोनों हेतु घातक है।

(c) लम्बी प्रजनन आयु की प्राप्ति जिससे जनसंख्या वृद्धि होती है

(d) बालिकाओ को विकास का मौका नहीं मिल पाता।

(e) बालिकाए, शिक्षा, आर्थिक सशक्तिकरण से वंचित रह जाती है

(f) दुर्भाग्य से यदि बालिका विधवा हो जाए तो सम्पूर्ण जीवन नारकीय हो जाता है।

(g) यौन शिक्षा के आभाव मे लैंगिक रोगो की चपेट मे आते है

गुरुकुल आई.सी.एस.
(An institute for civil services)
2nd माला, सुंदरम काम्पलेक्स, भंवरकुआँ मेन रोड, इन्दौर
9827462437, 0731-2465085, 0731-2367970

प्रश्न क्रमांक	मुख्य परीक्षा म.प्र. लोक सेवा आयोग
3	कानून होने के बाद भी असफल क्यों?

इसके कारण है-

(क) प्रशासनिक कुव्यवस्था।

(ख) ग्रामीण जीवन दशा।

(ग) रूढ़ि,

(घ) राजनीति, धर्म हस्तक्षेप।

(क) प्रशासनिक कुव्यवस्था

अनेक मामलो मे प्रशासनिक अधिकारियों को न तो सूचना होती है और यदि उन्हे सूचना होती है तो वे रूचि नहीं लेते।

ऐसे मे यह अपराध वर्षों से ग्रामीण अंचलो मे चलता रहा है।

ग्रामीण जीवन दशा

खराब आर्थिक हाल, गैरजागरूक, रूढ़ियों से बंधा समाज जहाँ प्रत्येक समुदाय हेतु रूढ़ि को मानना अनिवार्य होता

ऐसे मे कौन शिकायत करेगा ; कौन बाधा उत्पन्न करता है।
क्यो कि रूढ़ि तो सबको बांध देती है।

राजनीति : धर्म

कई मामलो मे जहाँ प्रशासन ने हस्तक्षेप किए उन्होने धर्म के आधार पर निशाने पर लिया गया। उन्हे धर्मविरोधी सिद्ध किया गया।

वही उसी समाज के राजनेताओ का विरोध झेलना पड़ जाता है।

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

प्रश्न क्रमांक

पंचायत मे महिला स्थिति

4

1 इस स्थिति मे निम्न बाते आती है

(a) पितृ सत्तात्मक समाज

(b) महिला की मानसिक परतंत्रता

(c) पंचायती राज मे आरक्षण का गलत लाभ उठाना।

(a) पितृ सत्तात्मक समाज

ऐसे समाज मे पुरुष ही प्रधान होता है। महिलाओ की भूमिका इसमे सांकेतिक और प्रतीकात्मक ही होती है।

उपरोक्त स्थिति मे स्पष्ट परिलक्षित है कि उक्त महिला इसी सामाजिक व्यवस्था की अंग है।

(b) महिला की मानसिक परतंत्रता

अ मनोवैज्ञानिक निर्णय के कारक मे एक ऐसा तत्व भी है

गुरुकुल आई.सी.एस.
(An institute for civil services)
2nd माला, सुंदरम काम्पलेक्स, भंवरकुआँ मेन रोड़, इन्दौर
9827462437, 0731–2465085, 0731–2367970

नीचे हाशिए में नहीं लिखें

प्रश्न क्रमांक	मुख्य परीक्षा म.प्र. लोक सेवा आयोग

कि वर्षों से जिसे जैसे माहौल का अभ्यास दिया जाए उनकी मनोवृत्ति उसके अनुकूल हो जाती है। उसे दलदल में भी सुख दिखता है।

(c) आरक्षण का गलत लाभ

पंचायती राज व्यवस्था में महिला सशक्तिकरण व वंचित वर्ग कल्याण हेतु आरक्षण का प्रावधान हुआ तो जरूर किन्तु इसका लाभ, महिला के संदर्भ में उसके परिवार के सदस्य और लाभ दलितों के संदर्भ में बाहुबली लोग उठाते है।

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

गुरुकुल आई.सी.एस.
(An institute for civil services)
2nd माला, सुंदरम काम्पलेक्स, भंवरकुआँ मेन रोड, इन्दौर
9827462437, 0731-2465085, 0731-2367970

2 स्थानीय निकायों में महिला आरक्षण की स्थिति असफल?

यह अवश्य है कि महिलाओं की सहभागिता अभी लक्ष्य ~~प्राप्ति के~~ अनुरूप प्राप्त नहीं है और तथा उचित सामाजिक, धार्मिक आर्थिक कारणों से उतनी सहभागिता नहीं मिल पाई।

किन्तु ऐसा नहीं है कि आरक्षण असफल है या इसकी उपलब्धि नगण्य है।

स्थानीय निकायों, पंचायती राजों में अनेक स्थानों पर महिला मेम्बरों एवं प्रधानों का नेतृत्व प्राप्त हो रहा है।

~~राजस्थान~~ मध्यप्रदेश की सावित्री ईजीनियर एक महिला प्रथम प्रयास में ही प्रधान बनती है और आज उन्हें देश के सर्वश्रेष्ठ गाँव निर्माण का श्रेय प्राप्त हुआ। यह बात है नरसिंहपुर की

2

अम

कौन से कदम उठाए जा सकते हैं

(a) महिला शिक्षा के प्रबंध।

(b) महिलाओ को पंचायती राज के क्रियाकलाप, एवं कार्यप्रणाली से परिचित कराना।

(c) उदारवादी समाज का निर्माण

(d) महिला पद पर कब्जा जमाने वाले पर कार्यवाही या फिर पुनः चुनाव द्वारा अन्य महिला को निर्वाचित करें।

(e) समय - समय पर प्रशासन द्वारा निरीक्षण हो।

(f) आरक्षण व्यवस्था को तार्किक बनाए।

(g) पंचायती बैठको आदि मे महिला की उपस्थिति अनिवार्य हो।

मुख्य परीक्षा
म.प्र. लोक सेवा आयोग

प्रश्न क्रमांक	
4	

समस्या के अंत

ऐसा नहीं है कि यह समस्या स्थानीय राजनीति तक सीमित है

बल्कि, विधानसभा आदि प्रतिनिधियों कामकाजी महिलाओं, मे भी यह समस्या व्याप्त है।

सामान्यतः काम काजी महिलाओं को कौन सा कार्य करना है नहीं करना है कब जाना है, कब आना है यहाँ तक कि उनके आजीविका पर भी उनका अधिकार नहीं होता

बड़े स्तर की राजनीतिक महिलाओं पर भी उनके परिवार का खासा प्रभाव होता है।

वे या तो अपने पति की के नाम पर निर्वाचित होती है या पार्टी के नाम पर उनके स्वयं के अस्तित्व को नकारा ही जाता है।

(5) नैतिक मूल्य

महिला मे सत्यनिष्ठा, कर्तव्यनिष्ठा उत्तरदायित्व, की का आभाव परिलक्षित हो रहा है। वे वस्तुनिष्ठ भी नही है।

~~[illegible] उनमें [illegible]~~

क्यो कि पंचायतो के आदर्शो के अनुरूप न तो वे कार्य कर रही है न ही उसके प्रति ~~[illegible]~~ उनका समर्पण है। उनका सर्वस्व समर्पण अपने परिवार तक सीमित है।

वे उत्तरदायी इसलिए नही है क्यो कि न तो वे स्वेच्छा से कार्य कर रही है न ही वे अपने कार्यो की व्याख्या कर सकती।

वस्तुनिष्ठ इसलिए नही है क्यो कि उनके निर्णय अपने अवधारणाओ संवेदनाओ से प्रभावित हो।